

Dr DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

THINKING PROCESS

चिंतन एक जटिल-संज्ञानात्मक प्रक्रिया है, जिसमें कई अवस्थाएं या प्रक्रियाएं शामिल होती हैं जो इस प्रकार हैं-

1. विचारात्मक प्रक्रिया- चिंतन का संबंध विचारों से होता है। जब किसी व्यक्ति के सामने कोई समस्या उत्पन्न होती है तो सर्वप्रथम उस समस्या के संबंधित विभिन्न प्रकार के विचार उस व्यक्ति के मानस पर उठते रहते हैं। इन्हीं विचारों की श्रृंखला के रूप में चिंतन की क्रिया जारी हो जाती है।
2. प्रतीकात्मक प्रक्रिया- चिंतन में प्रतिको की प्रधानता रहती है। चिंतन का संबंध वस्तुतः उपस्थित तथा

अनुपस्थित दोनों तरह के उद्दीपनों से होता है। वे सभी उद्दीपन वास्तव में प्रतीक के रूप में चिंतन के समय व्यक्ति के मानसिक पटल पर अपनी भूमिका निभाती है, जिससे चिंतन की क्रिया अपनी मंजिल के प्रति सक्रिय रूप से जारी रहती है।

3. समस्या समाधान प्रक्रिया- चिंतन में समस्या समाधान प्रक्रिया मूल रूप में काफी महत्वपूर्ण होती है। इसका महत्व इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि चिंतन को समस्या समाधान प्रक्रिया भी कहा जाता है। वास्तविकता यह है कि चिंतन का आरंभ किसी समस्या से होता है। और चिंतन की क्रिया उस समस्या के समाधान तक जारी रहती है। चिंतन का संबंध ऐसी समस्या से होता है जो समाधान योग्य होती है, यह दूसरी बात है कि व्यक्ति समस्या के समाधान में सफल हो सकता और दूसरा व्यक्ति उसमें सफल नहीं भी हो सकता है। इस दृष्टिकोण से चिंतन वास्तव में कल्पना से भिन्न होता है, क्योंकि

कल्पना का संबंध ऐसी समस्या से होता है जो जिसका समाधान हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है।

4. प्रयत्न एवं भूल प्रक्रिया- चिंतन में प्रयत्न एवं भूल प्रक्रिया सक्रिय रहती है जब व्यक्ति किसी समस्या के संबंध में चिंतन शुरू करता है तो इसके साथ ही यह प्रक्रिया शुरू हो जाती है शुरू में भूले अधिक होती है लेकिन बढ़ते हुए प्रयत्न के कारण फूलों की संख्या घटती जाती है और अंत में व्यक्ति बिना भूल के ही अपनी समस्या का समाधान कर लेता है।

5. मानसिक तत्परता प्रक्रिया- चिंतन प्रक्रिया का गहरा संबंध मानसिक तत्परता से है। व्यक्ति अपनी समस्या से संबंधित समाधान ढुंढते समय एक विशेष दिशा में प्रयत्न करने का निर्णय लेता है। चिंतन की यही दिशा मानसिक तत्परता कहलाता है। जब व्यक्ति का यह तत्परता सही दिशा में होता है तो उसका चिंतन सफल होता है और समस्या का

समाधान शीघ्र ही हो जाता है। इसके विपरीत इस तत्परता के गलत होने होने पर समस्या का समाधान नहीं हो पाता है और चिंतन विफल साबित होता है। किसी समस्या के समाधान से पहले व्यक्ति एक मानसिक तैयारी करता है कि वह अपनी समस्या के समाधान के लिए किस प्रकार का व्यवहार करे।

चिंतन या समस्या समाधान में तत्परता का महत्वपूर्ण स्थान देखा गया है। जब तत्परता सही दिशा में होती है तो समस्या का समाधान सरल बन जाता है, लेकिन गलत दिशा में तत्परता होने के कारण समस्या का समाधान कठिन हो जाता है। अतः तत्परता से एक ओर समस्या समाधान मिलती है तो दूसरी ओर इससे हानी भी होती है।